

# हंसना, जीतना और भूल जाना

जुही जैन

खुलकर हंसना और इस हंसी में थोड़ी देर के लिए ही सही जिन्दगी के दुख दर्द से राहत ले पाएं इसी कोशिश में इण्डियन हेल्थ ऑर्गनाइजेशन की यह प्रतियोगिता आयोजित की गई।

कमातीपुरा की तंग गलियों से गुज़रने वाले राहगीरों को लगा उस इलाके में रहने वाली तमाम वेश्याएं पागल हो गई हैं। क्यों न लगे ऐसा। सब की सब खुशी से ब्रेतहाशा हंस रही थीं, लगातार, बिना सांस रोके। पर यह कोई पागलपन नहीं था। यहां पर हंसने की एक प्रतियोगिता चल रही थी। इण्डियन हेल्थ ऑर्गनाइजेशन की पन्द्रहवीं जयंती के समारोह पर यह प्रतियोगिता आयोजित की गई थी।

उस दिन उस इलाके के सारे चकले, रंगबिरंगी पोशाकें पहने वहां रहने वाली औरतों की जीवन्त हंसी से गूँज रहे थे। ऐसा लग रहा था कि रोज़मर्रा की घुटन भरी जिंदगी से यह औरतें कुछ पल छीनकर लाई हों। अपने जीवन की कड़वी सच्चाई कुछ समय के लिए भूलना चाहती हों। इस दिन वहां काम करने वाली एक तेईस वर्षीय लड़की संगीता ने बताया “चकले की जिंदगी नर्क जैसी है। आज मैंने सीखा कि जीवन को सही मायने में कैसे जीया जाता है। जब सबसे लम्बे

समय तक जोर से हंसने के लिए मुझे ईनाम मिला, तब वह मेरी जिंदगी का सबसे खुशगवार पल था। मैंने फैसला किया है, अब चाहे जो भी हो मैं हंसती रहूंगी, मायूस नहीं होऊंगी।”

इसी दिन कमातीपुरा में एक हंसने के क्लब की भी स्थापना की गई। इस इलाके में काम करने वाले एक डॉक्टर का कहना है—“औरतों की जिंदगी में खुलकर हंसने के मौके वैसे भी बहुत कम आते हैं। समाज उन्हें इसकी इज़ाजत नहीं देता। फिर यहां की औरतें तो पेशा करती हैं। इस तरह की



प्रतियोगिता आयोजित करने के पीछे हमारा मकसद है, हंसने का एक मौका देना। ये औरतें बरसों से शर्म और मायूसी के माहौल में जी रही हैं। इस तरह की प्रतियोगिता समय समय पर आयोजित करने से वह थोड़े समय के लिए ही चाहे, रोज़ाना के दुख: दर्द भूल सकेंगी। खुलकर हंसेंगी और थोड़ी देर के लिए ही सही जिन्दा हो जाएंगी।” □

साभार—“आई.एच.ओ. न्यूज़लेटर” अंक-3; जून 1997